

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ६७२ - घ

Title गायत्री हृदयम्

Author _____

Extent ७ Age _____

Subject मकितशास्त्रम् : अध्यात्म

नं० ६७२-घ

गायत्री हृदयम् (भक्तिशास्त्रम्)

पत्राणि ७ (अपूर्णम्) (जीर्णम्)
१०

ॐ पद्मगायत्री नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ नू र्जवः
 स्वः चतुहः पद्मगायत्री नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ ओं ख
 मे नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ गायत्री नमस्तर्पयाम्
 ॥ ॐ सावत्री नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ सारपुत्री
 नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ वेस्तवै नमस्तर्पयाम्
 ॥ ॐ वेद नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ प्रयेव
 ये नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ जयादे नमस्तर्पयाम्
 ॥ ॐ वजोदे नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ साकते नम
 स्तर्पयाम् ॥ ॐ वेस्तदेवनमस्तर्पयाम् ॥ ॐ स
 र्वजते नमस्तर्पयाम् ॥ ॐ सल्लमोदेते नमस्तर्प

श्रीगणेशाय नमः

४

तर्पयामी ॐ सर्वभूते नमस्तर्पयामी ॐ त्रिविधि शुभो
नस्य चतुर्विंशतत्याकं गायत्री तर्पता येन त्वे लोकं
तेन तृप्ता इति गायत्री तर्पणं पूर्ये समापते मम
ॐ स्यात्ताविसष्टसु सच वम प्रीकृतं जगत्तन्मायत्री
नो ब्रूह ब्रह्मो ब्रवाच ब्रह्मज्ञानो सती प्रकीर्त्तनी गायत्री
यत्री स्यात्स्यात्सामः तमससू परं शुक्लं वर्णं महा
नपुंसकः सर्वं स रूपी सा सीतं तत्स्यो गन्धो मय्यमा
ना यो सलीला जगत्सलीला तफे स जगत्तवा फे नाव
वृद्ध वृद्धा जगत्तु म जगत्तु गु जगत्तु जगत्तु वृद्धा ४

तवायेरेओं

ऐसग्रीरवदे॥ जमेवीयेरु जवायेरेकारे जवतओंकार
यः व्याहतेसं जवनव्याहते ज्योगायत्री जवगात्रायासावत्री त
जवसावत्री सरससुत्यं जवसरससुत्यावेदासं जवन॥
वेदे ज्यः कयाप्रवर्तते विसष्ट उवाच काव्याहृत्यः काव
गायत्री विहृत उवाच ओम् जवः ओम् त्वः ओम् महः ओम् जनः
ओम् तपः ओम् सत्यं पिता व्याहृत्य ओम् तत्सवतवरे न्यं जगदे
वत्स्ये धीमहे धियो यो नः प्रचोधात् पृथागायत्री विसष्ट
उवाच कं जवः कं त्वः कं महः कं जनः कं तपः कं सत्यं
कं त्रः कं त्वतः कं वरे न्यः कं जगिः कं देवत्स्यः कं धीयः कं नः
महा कं धी

॥५॥

ति

कंप्रचो घात ब्रह्म उवाच नृ ईत गूर्लोकः ॥ गवः इत्यमंतरक
लोकः ॥ स्वः रती प्रुर्लोकः ॥ मरुः इती मरुर्लोकः ॥ जनः इती जन कः
लोकः ॥ त्वः इती पलोकः ॥ सव्यः इती सत्यलोकः ॥ गूर् जैवः
त्वः वैलोक येन दती नद सोत द तेन ॥ सवनुरती सवताभा
दित्यः ॥ वरे न्यं मेत्यं न्या वे विरे न्यं मन्यः ॥ मिने प्रजा पती ॥ गार्गी ई
त्या पो वै गार्गी ॥ देवस्येती ई द्रो वै देवहः ॥ यदी व्यंत द्दी इ द्दे तस्या
त पुरुषो नाम रुद्रः ॥ धीमही प्रध्यात्मं यदध्यात्मं तत प्रमंपदं
ध्यायेम धीयः प्रमात्मा सदाशिवः ॥ पुरुषो नः प्रत्मान शुधर्म
प्रवोधात तस्मात्प्रेमेव प्रमो धर्म ईते षागा यत्री विसष्ट उवाच ॥

॥५॥

गायत्रीकं गोत्रकं त्याकृत्वा कृत्यपदा कृत्यकृत्वा कृत्यमाया
 कंलकणकं विचेष्टीतं कं मुद्ररुतं ब्रह्म उवाच सां त्याकृत्वा
 गोत्रं वनर्विं सताकृत्वा पदाष्टकृत्वा पंचमाक्षिं अंशं
 ज्योः सामपादत्रयं पूर्वदृष्टं पचमानं धर्मः षट्कृत्वा
 शीत्याकलो व्याकरणिरुक्तं ज्योतीः सा सुंपंचशया प्र
 वेधकल्पना कप्पा प्रवत्यका प्रहेलका ईता पंचतनूनां
 मंसां न्यायधर्मसत्त्वादी च दृष्टं गायत्र्यो गुत्रुष्टौ विर
 हती पकं त्रष्टौ पजगत्या कं न्या शीतद्वारुतं वशष्टौ उवाच
 गायत्रा को वर्तकः सुरः काना नामा महर्देवता न ब्रह्म

३३
 अथ

॥६॥

उवाच। प्रातःकाले रक्तवर्णः कुमारः। डंडकमंडलधारि
 रक्तकंडलोमहमालाधरः। हंसवाहनीबहनस्रोता
 हर्षवन्मरोपारजोगुणयुगता। जल्लोकविवक्षीताव्र
 ह्मदैवत्या। अवेदसहता। सादित्यपयगामनी। मध्या
 गेस्वेतवर्णः। नृसोलधारि। यौवनव्याचनेत्राब्रह्मरूपा
 तमोगणसरूपांगारसपत्याग्रीसरूपा। जल्लोकविवक्षी
 ता। ज्जनरवेदसहता। रुद्रदैवता। सादित्यपयगामनी॥
 सायंकालेवर्धाकर्मवनी। पीतवस्त्राचतर्क्षिणा। संखचक्र
 गद्यापदधारि। गडगारुडासत्यगणसरूपा। दहणग्री

वाय
 रूपा

॥६॥

सरुपा। मुर्लीक विवस्माना सा। म वेद स ह न। विस्म दे
 वत्या। सा। दित्य पथ गा म ना। ख उ ज म धे म गां धा रे ती॥
 पुरा स ह देवता ना। प्रथमं म ग दे व तं। द्वी तं। म ज्ञा स त
 दे व तं। त्र ता म सो म दे व तं। चतुर्थी मी शान दे व तं। पंचमं
 मा दित्यः दे व तं। षष्ठं ब ही ख दे व तं। स व न मं मित्र दे व तं।
 ष मं ज ग दे व तं। न व मं म ज म दे व तं। द स म सा वि त्र दे व तं।
 का द शं वि षु क मी दे व तं। द्वाद शं पु षा दे व तं। त्रयो द शं म
 रू दे व तं। चतु र्द शं वा यु दे व तं। पंच द शं वा म दे व तं। षो ष्ठं
 मै त्रा व न दे व तं। सप्त द शं म र्ज म दे व तं। अष्ट द शं वि षु दे
 व दे व तं। न वि स वि स्म दे व तं। वि स च द दे व तं। एक विं स रू

॥ ९ ॥

कै

इ देवतं द्विविंशं कुवे देवतं त्रयोविंशं सप्त नीकुमार देव
लै चतुर्विंशं विष्णु देवतं सप्त ध्यानं मत्त के ब्रह्मा ह दे
विष्णु ललाटे रुद्रः केशो यो मेघा चुहृत्वा च द्रादित्य
यो कर्णो प्रकृति ह त्मती नास के सप्त नीकुमारौ मये
सप्त बाहवौ लोपालास सप्त नौ मर्म उ दे सप्त द्युताशन
नः के टा क सी ई द्रयाणी जंघनं प्रजापती उरु कैलास म
लयौ जात्रुन विष्णु देवा गलफयो पत्रः पादा प्रथमी रुमा
णी ब्रह्मैव धायः सप्ती नेग्रहा वाससे वरतवः वास
सी शम्भो द्वियं न मेखन मेखौ महोरात्रं पंच स रुद्र

॥ ९ ॥

सर्ववरप्रदोमहामुनेत्रांगात्रीमर्त्यमहंप्रवक्षेतेननमेह
 धःमद्येनंतेनकर्तुंतेनेष्टंजवतीतत्सर्वनूरुघायनमः॥ ॐ
 तस्मात्तथापोहेष्टायनमःगायत्रीरुघंमद्वन्यत्यंयोब्राम
 एपठेतगायत्रीमहामादिकलत्रत्रयस्यजपस्य
 फलंलजेतुसर्वतार्थेषुस्नातो जवतसर्वदेवेषुवेत्तान्
 जवतसर्ववेद्याधीतुजवतब्रह्मरुहत्यायपोतुजवतस्वर्ग
 मतेयपूतो जवतमपेपानातुपूतो जवतमजहजहणतपू
 नो जवमगमयागमनानुपूतो जवतुपंकनीसतसह
 साधकदोषातपूतो जवतमष्टो ब्रह्मणनगहीत्वा ब्रह्म
 लोकगकृतोकास्यत्रुपंसेतपीतचलहनचुहाखा

ॐ ॥ ८ ॥ दि क्रतं पापं तं कारो दि ह ते कृणत ॥ १ ॥ त कारं चं प क व र्ण
ब्रह्म विष्णु शिवार्जतं ॥ ब्रह्म ह त्या क्रतं पापं त कारो द ह
ते कृणत ॥ २ ॥ स कारं त्व व र्ण च केश वेन स दार्जतं ॥ गो
ह त्या ज न त पा प स त कारो द ह ते कृणत ॥ ३ ॥ वि कारं
लो ह तं व र्ण शं क रे ए स दार्जतं ॥ स्त्री ह त्या ज न तं पा
पं वि कारो द ह ते कृणत ॥ म नू का रं त्व व र्ण च वा स
दे वेन पूजतं ॥ लं ग दौ ष क्र त पापं तू कारो द ह ते कृणत
॥ ४ ॥ वि कारं धू त व र्ण च ग णे स न स दार्जतं ॥ म द पा न क्र तं
पापं व कारो द ह ते कृणत ॥ ५ ॥ रे कारं र क्त व र्ण च श्री सूर्य ॥ १ ॥

ॐ

नमः सदा जितं मग म्मा ग म्मा त पा पं रे का रो द ह ते ठ ए त ॥
ने का रं ह्री वं ए च पा वित्या त स दार्ज ने म ज ह ज ह त पा
पं ने का रं द ह ते ठ ए त ॥ २ ॥ गो का रं की त की वं ए ब्र ह्म
ए त स दार्ज ने सं स र्ग ज न तं पा पं गो का रो द ह ते ठ ए त ॥ ३ ॥
गो का रं क ज ला जं च स रा चार्ये न पू ज त गुरु नं द्या क्र तं
पा पं गो का रं द ह ते ठ ए त ॥ ४ ॥ दे का रं मा ल ती वं ए शं क
रे ए स दार्ज ने गार्तृ वं ध क्र तं पा पं दे का रो द ह ते ठ ए
त ॥ ५ ॥ व का रं म धु वं ए च ध र्म ध र्म ज न तं सु द्रान्यः ज ह
ए त पा पं व का रो द ह ते ठ ए त ॥ ६ ॥ स का रं मा ल ती वं ए

५

वर्तेन सदा जितं पशुहत्या कृतं पापं त्यक्त्वा रोदहते ठण्णत्
१३॥ धीकारं मेघवर्णं च देवतासु सदा जितं बुधा देवक
तं पापं धीकारो दहते ठण्णत् १४॥ मकारं स्यामवर्णं
च प्रह्वं मनैः सदा र्जितं मया वादं कृतं पापं मकारो
दहते ठण्णत् १५॥ हीकारं मल्लीवर्णं वह्ना पूजितं
सदा कर्महानं कृतं पापं हीकारो दहते ठण्णत् १६॥
धीकारं पादुर्वर्णं मुनीनां पूजितं सदा प्रसीदं हं क
तं पापं धीकारो दहते ठण्णत् १७॥ यकारं दध्नीवर्णं
द्विजैः सदा र्जितं यकारं कृतं पापं यकारो दहते ठ

३

५

एतत् १५ योकारं तीलवर्णं च योगनीजः सदा र्यतं ॥ कामेन
 कृतं पापं योकारो दहते कण्ठे ॥ २० ॥ नकारं मूकवर्णं च शंकरे
 न सदा र्यतं ॥ जलपानकृतं पापं नकारो दहते कण्ठे ॥
 प्रकाशं हं गुलवर्णं मनस्ये सदा र्यतं ॥ मन्त्रो यकृतं पापं
 प्रकाशो दहते कण्ठे ॥ २२ ॥ चकारं संधवर्णं च माघवेन स
 दा र्यतं ॥ सर्वद्रुतं पापं चोकारो दहते कण्ठे ॥ २३ ॥ दि
 कारं जवर्णं च शंकरापी सदा र्यतं ॥ नानादो यकृतं पापं
 यकरो दहते कण्ठे ॥ २४ ॥ योकारं वववर्णं च शंकरेण
 सदा र्यतं ॥ जन्मजन्मकृतं पापं योकारो दहते कण्ठे ॥